अध्याय 4

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

अंतर्देशिय उत्पादन

- बीसवी शताब्दी के मध्य तक उत्पादन मुख्यत: देशों की सीमाओं के अंदर तक सीमित था ।

- देश की सीमा से बाहर केवल कच्चा माल, खाद्य पदार्थ और तैयार उत्पाद का ही आयात निर्यात होता था।

- बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन के बाद उत्पादन एवं विश्व व्यापार का परिदृश्य ही बदल गया।

बहुराष्ट्रीय कंपनी

- वैसी कंपनियाँ जो एक से अधिक देशों में में उत्पादन पर नियंत्रण अथवा स्वामित्व रखती है, बहुराष्ट्रीय कंपनी कहलाती हैं।

- **MNCs :- Multinational companies**

cont.....

बहुराष्ट्रीय कंपनीयों का सीमाओं के पार प्रसार

बहुराष्ट्रीय कंपनीयों द्वारा सीमाओं के पार प्रसार करने के पीछे मुख्य करण निम्नलिखित हैं : -

- **बाजार में विस्तार :- एक से अधिक देशों में उत्पादन करने से इनके वस्तुओं को बेचने के लिये बाजार में विस्तार हो जाता है जिससे इनका विक्रय बढ़ जाता है, परिणामतः लाभ भी बढ़ जाता है।**

cont.....

बहुराष्ट्रीय कंपनीयों का सीमाओं के पार प्रसार

- **उत्पादन लागत में कमी :-** ये सीमाओं से पार ऐसे राष्ट्रो में अपना कार्यालय और फैक्ट्रीयां खोलती हैं जहाँ उन्हें सस्ता, योग्य, प्रशिक्षित श्रम और संसाधन मिलने की संभावना होती है। ऐसे में उत्पादन लागत (cost) कम होगा और लाभ अधिक होंगी।

- जैसे ऐसी संभावनाओं के साथ फोर्ड (ford motors) जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने चेन्नई में 1995 में अपनी ब्रांच खोली।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादन इकाई स्थापित करने के लिये स्थान निर्धारित करने वाले कारक :-

- जहाँ कम लागत पर कुशल और अकुशल श्रम उपलब्ध हो।
- बाजार के नजदीक हो।
- उत्पादन के अन्य कारक जैसे बिजली, पानी, परिवहन इत्यादि की सुविधा हो।
- सरकार की नितियाँ उनके अनुकूल हो अथार्थ श्रम कानून लचीला हो

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादन के तरिके

(उत्पादन पर नियंत्रण करने की विधियाँ)

(a) संयुक्त उपक्रम विधि (joint venture)

- बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ किसी देश की स्थानीय कंपनी (local company) के साथ मिलकर संयुक्त रूप से उत्पादन करती है l
- स्थानीय कंपनी से प्रतिस्पर्धा से बचने के लिये MNCs ऐसा करती हैं

cont.....

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादन के तरिके

(उत्पादन पर नियंत्रण करने की विधियाँ)

(b) लागत कम करने की विधि (cost)

- बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कभी कभी छोटे उत्पादको (small producer) को उत्पादन का आर्डर देती है
- और इन छोटे उत्पादकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को अपने ब्रांड नाम से बेचती हैं
- ऐसा करके MNCs अपनी लागत (costing) को कम करके अधिक मुनाफा (profit) कमाते हैं

बहुराष्ट्रीय कंपनियों से स्थानीय कंपनियों को लाभ

- **MNCs के साथ संयुक्त रूप से काम करने से**
  - 👉 स्थानीय कम्पनियों को उत्पादन की विधियों, नए - नए मशीनों के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है
  - 👉 नई तकनीकों का प्रयोग करके वे भी विकास कर लेते हैं

- **MNCs से प्रतिस्पर्धा के कारण**
  - 👉 स्थानीय कम्पनियों का भी उत्पादन क्षमता बढ़ जाता है
  - 👉 वस्तुओं की गुणवत्ता मे भी वृद्धि हो जाती है

बहुराष्ट्रीय कम्पनी

- एक से अधिक देशों में उत्पादन
- वित्तीय सुविधाओं की अपार संभावना

राष्ट्रीय कम्पनी

- एक ही देश मे उत्पादन
- वित्तीय सुविधाओं की सिमित संभावना

■ बहुराष्ट्रीय कम्पनी के निवेश का एक मुख्य तरीका यह है कि यह देशी कंपनी को खरीद लेती है और फिर उत्पादन को बढ़ाती है।

निवेश

- भूमि, भवन, मशीन और अन्य उपकरणों की खरीद में व्यय की गई मुद्रा (currency) को निवेश कहते हैं
- विदेशी कम्पनियों द्वारा किये गए निवेश को विदेशी निवेश कहते हैं

(a) FDI : - Foreign Direct Investment

(b) FII :- Foreign institutional investment

विदेश व्यापार के लाभ

उत्पादकों के लिये अवसर

👉 यह घरेलू, बाज़ारो अर्थात अपने देश के बाजारों से बाहर के बाजारो में पहुँचने के लिए उत्पादकों को अवसर (opportunity) प्रदान करता है

क्रेता के पास विकल्प

👉 विदेश व्यापार के माध्यम से उत्पादक अपने उत्पादों को विदेश मे भी बेच सकते है जिसके कारण खरीददारों के पास अनेक विकल्प उपलब्ध हो जाते हैं।

विदेश व्यापार के लाभ

- **वस्तुओं की गुणवत्ता मे वृद्धि और क़ीमतों मे कमी**
  - 👉 विदेश व्यापार के कारण एक, देश में उत्पादित वस्तु दूसरे देश में पहुंच जाती है
  - 👉 इसके कारण उत्पादकों के बीच अपने उत्पादों को बेचने के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है
  - 👉 इस प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप वस्तुओं की गुणवत्ता में वृद्धि तथा किम्मतो मे स्थायित्व या कमी आ जाती है।

- **इस प्रकार, विदेश व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों को जोड़ने अथार्त बाजार एकीकरण का कार्य करता है।**

वैश्विकरण Globalisation

- विभिन्न देशों के बीच परस्पर संबंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण कहलाता है।

- पिछले 20-30 वर्षो में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपने उत्पादन में तीव्र विस्तार किया है।

- इस क्रम में MNCs ने विदेशी जमीन पर उत्पादन इकाइयाँ स्थापित की, जिससे
  - 👉 विदेशी निवेशी में वृद्धि हुई,
  - 👉 विदेश व्यापार बढ़ा
  - 👉 दुनिया के विभिन्न बाजार एक दूसरे से जुड़ गयें

- इसप्रकार दुनिया के विभिन्न बाजारों का एकीकरण ही वैश्विकरण कहलाता है।

वैश्विकरण को सम्भव बनाने वाले दो महत्वपूर्ण कारक

(a) तकनीक में तीव्र उन्नति

- परिवहन तकनीक (प्रौद्योगिकी) के विकास के कारण विश्व के किसी भी कोने में लम्बी दूरियों तक वस्तुओं को कम लागत (costing) पर पहुंचाना संभव हो गया है।

- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने कंपनियों को एक देश से दूसरे देश में स्थित अपनी शाखाओं को नियंत्रित करना आँसान बना दिया ।

वैश्विकरण को सम्भव बनाने वाले दो महत्वपूर्ण कारक

(b) व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण

- उदारीकरण ने भी वैश्वीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- उदारीकरण के कारण वस्तुओं का एक देश से दूसरे देश मे आयात निर्यात संभव हुआ है।

👉 अन्य कारण / कारक

- विश्व व्यापर संगठन (WTO) जैसे अंतराष्ट्रीय संगठनों का सहयोग
- MNCs का विभिन्न देशों में अपनी इकाई स्थापित करना

व्यापार अवरोधक

- व्यापार पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध को व्यापार अवरोधक कहते हैं

- जैसे :-
  - 👉 कोटा
  - 👉 सीमा शुल्क

भारत मे व्यापार अवरोधक का इतिहास / कहानी

स्वतंत्रता के बाद आर्थिक नीति (Trade Barrier)

👉 भारत जब 1947 में आजाद हुआ तब भारत सरकार (GOI) ने विदेश व्यापार पर व्यापार अवरोधक आरोपित कर दिये ।

कारण :-

👉ऐसा भारत सरकार ने अपने घरेलू उत्पादकों को विदेशी कंपनियों की प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए किया

👉 क्योंकि उस वक्त हमारी कंपनिया विदेशी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा करने में सक्ष्म नहीं थी।

भारत मे व्यापार अवरोधक का इतिहास / कहानी

(Trade Barrier)

नीतियों मे परिवर्तन

👉 1991 तक आते आते भारत सरकार ने महसूस किया कि अब हमारी कंपनियाँ विदेशी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा करने में समर्थ हैं तो सरकार ने विदेश व्यापार पर से व्यापार अवरोधक हटा लिया।

उदारीकरण

👉 सरकार द्वारा विदेश व्यापर (आयात) पर से व्यापार अवरोधक अथार्त प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया उदारीकरण कहलाती है।

भारत मे व्यापार अवरोधक का इतिहास / कहानी

व्यापार अवरोधक (Trade Barrier)

👉 विदेशों से आयात किये जाने वाले वस्तुओं एवं सेवाओं पर सरकार द्वारा आरोपित आयात कर (Import tax / duty) को ही व्यापार अवरोधक कहते हैं।

👉 किसी भी देश की सरकार अपने देश में विदेश व्यापार को बढाने या घटाने के लिये व्यापार अवरोधक का प्रयोग करती है।

👉 जैसे- भारत सरकार यदि चीनी खिलोनों के उपर अत्यधिक आयात कर आरोपित कर दे तो चिनी खिलौने भारतीय बाजार में महंगे हो जायेंगे जिसके कारण लोग भारतीय खिलौना खरीदना शुरू कर देंगे। जिससे देशी उत्पादकों को लाभ होगा

new text

उदारीकरण और वैश्विकरण

(Trade Barrier)

- उदारीकरण (Liberalisation) का अर्थ है कि व्यापार निवेश और उद्योगों के प्रति उदार नीति अपनाना।

- भारत का उदाहरण लेकर हम यह बात स्पष्ट करेंगे कि इस उदारीकरण की नीतियाँ कैसे वैश्वीकरण की प्रक्रिया को सहायता पहुँचाती हैं।

- भारत सरकार द्वारा व्यापार, निवेश और उद्योगों के क्षेत्र में उदारीकरण की नीतियाँ अपनाई गई।

cont.....

उदारीकरण और वैश्विकरण

(1) पहला, अनेक औद्योगिक कार्यक्रम जिन्हें पहले सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम चलाते थे उन्हें अब निजी क्षेत्र के लिए भी खोल दिया गया है।

(2) दूसरा, पहले बहुत सी ऐसी वस्तुए, जिन्हें यद्यपि निजी क्षेत्र को बनाने की अनुमति थी. तथापि ऐसी चीजों के उत्पादन के लिए सरकार से अनुमति लेना आवश्यक होता था। अब इस प्रक्रिया को काफी हद तक समाप्त कर दिया गया। निजी क्षेत्र को अब कुछ ही चीजों के उत्पादन के लिए सरकार से अनुमति लेनी होती थी, जैसे हानिकारक रसायन, शराब, सिगरेट, औद्योगिक विस्फोट पदार्थ, अंतरिक्ष में जाने वाले विद्युतीय उपकरण और दवाएँ आदि के उत्पादन के लिए।

cont.....

उदारीकरण और वैश्विकरण

(3) अब निजी क्षेत्र को मूल उद्योगों में प्रवेश करने की भी अनुमति दे दी गई। ऐसे कुछ मूल उद्योग इस प्रकार हैं-लोहा और इस्पात, वायु परिवहन, बिजली, जहाज निर्माण, रक्षा सम्बन्धी सामग्री और भारी मशीनें आदि

(4) केवल यही नहीं निजी क्षेत्र को अनेक प्रतिबन्धों से मुक्त कर दिया गया, जैसे लाइसेंस लेना, कच्चे माल के लिए आयात की अनुमति प्राप्त करना, मूल्य निर्धारण करना, वितरण पर नियन्त्रण तथा बड़ी व्यापारिक कम्पनियों द्वारा निवेश की आज्ञा देना आदि।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उदारीकरण के परिणामस्वरूप उद्योगपतियों को उत्पादन करने के लिए अनेक सुविधाएँ दी गई और अनेक औपचारिकताओं को पहले से कहीं अधिक सरल कर दिया गया।।

आर्थिक सुधारों की आवश्यकता

निम्नलिखित कारणों से भारत मे आर्थिक सुधार करने पड़े :-

- राजकोषीय घाटे में वृद्धि
- प्रतिकूल भुगतान संतुलन में वृद्धि
- विदेशी मुद्रा भंडार में कमी
- कीमतों में वृद्धि
- सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का कार्य संतोषजनक न होना
- भारतीय कम्पनियों को प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना

कुछ महत्वपूर्ण पद

- **मुक्त व्यापार :-** जब दो देशों के बीच व्यापार बिना किसी प्रतिबंध के होता है तो उसे मुक्त व्यापार कहते हैं

- **निजीकरण :-** सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियों को चरणब्ध तरीके से निजी क्षेत्र में बेचना।

विश्व व्यापार संगठन

परिचय

- **WTO :- World Trade Organization**
- 1995 में संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देशों द्वारा आपसी व्यापार को बढ़ावा देने के लिये स्थापित किया गया
- यह एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का समर्थन करती है और उदारीकरण को बढ़ावा देती है।
- वर्तमान में दुनिया के 164 देश, इसके सदस्य हैं।
  इसका मुख्यालय स्वीटजरलैंड (जेनेवा) में है।

विश्व व्यापार संगठन

उद्देश्य

(a) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाना

(b) मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना

विश्व व्यापार संगठन

कार्य

(a) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित नियमों को निर्धारित करना

(b) व्यापार अवरोधको को हटाने के लिये देशों पर दबाव डालना

(c) मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना

विश्व व्यापार संगठन

WTO के प्रयास

- WTO के अनुसार विश्व व्यापार और विदेश निवेश पर किसी तरह का अवरोधक नहीं होना चाहिए।

- अर्थात WTO विश्व के सभी देशों पर अपनी नीतियों को उदार बनाने के लिये दबाव डालती है तथा ताकि संपूर्ण विश्व के बीच मुक्त व्यापार हो सके ।

cont...

विश्व व्यापार संगठन

आलोचना / कमीयाँ

- विकसित देशों ने अनुचित ढंग से व्यापार अवरोधकों को बनाये रखा है जैसे :- कृषि उत्पाद (अमेरिका v/s भारत)
- जबकि WTO के नियमों ने विकासशील देशों को व्यापार अवरोधक खत्म करने के लिये विवश कर दिया है
- WTO के निर्णयों पर USA, EU, JAPAN जैसे विकसित देशों का प्रभाव

निष्कर्ष

अतः उदारीकरण को न्यायसंगत करने की जरूरत है।

भारत पर वैश्विकरण के प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

(a) उपभोक्ताओं को लाभ

- पहले से अधिक विकल्प उपलब्ध हैं
- कम कीममत पर अधिक गुणवत्ता वाले उत्पाद का लाभ
- परिणामतः लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है

(b) निवेश में वृद्धि

- MNCs कम्पनियों द्वारा भारत में विदेशी निवेश में वृद्धि हुई है

cont...

भारत पर वैश्विकरण के प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

(c) भारतीय कम्पनियों को लाभ

- भारत के उत्पादकों को उन्नत तकनीक और प्रगतिशील उत्पादन की विधियों की जानकारी हुई।
- MNCs से प्रतिस्पर्धा कर बहुत सारी भारतीय कम्पनियाँ भी MNCs बन गयीं।

■ टाटा मोटर्स ■ ऐशियन पेंटस ■ इनफ़ोसिस
■ सुंदरम फाइनेंस ■ रैनबैक्सी

cont...

भारत पर वैश्विकरण के प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

(d) रोजगार सृजन

- उद्योगों और सेवा के क्षेत्र में रोजगार का सृजन हुआ है

(e) संचार के साधनों का विकास हुआ ।

भारत पर वैश्विकरण के प्रभाव

नकारात्मक प्रभाव

- छोटे उत्पादकों को नुकसान हुआ है
- बहुत सारे छोटे उत्पादक MNCs से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाएं और उन्हें अपनी उत्पादन इकाई बंद करनी पड़ी

  ■ बैटरी ■ प्लास्टिक ■ खिलौना
- भारत में कृषि के बाद सबसे अधिक रोजगार लघु उद्योगों में था वैश्विकरण के कारण लघु उत्पादों के बंद होने से भारत की बहुत बड़ी आबादी बेरोजगार हो गयी

cont.....

भारत पर वैश्विकरण के प्रभाव

नकारात्मक प्रभाव

श्रमिकों पर प्रभाव

(a) श्रमिकों की बेरोजगारी में वृद्धि हुई

(b) श्रमिकों को अस्थायी आधार पर नियुक्त किया गया

(c) श्रमिकों को संरक्षण और लाभ नहीं मिल रहा

(d) श्रमिकों का अधिक घंटे तक काम करना समान्य बात हो गई

वैश्विकरण में सरकार की भूमिका

1) वैश्वीकरण की नई नीति के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ने का प्रयत्न किया गया ताकि पूँजी, तकनीकी ज्ञान और अनुभव का विश्व के विभिन्न देशों से आदान-प्रदान हो सके।

2) सरकार ने माल के आयात पर से अनेक प्रतिबन्ध हटा दिए।

3) आयातित माल पर कर, कम कर दिए।

4) विदेशी निवेशकों को भारत में निवेश के लिए प्रोत्साहन दिया गया।

5) तकनीकी क्षेत्र को हर ढंग से उन्नत करने का प्रयत्न किया गया।

न्यायसंगत वैश्विकरण की आवश्यकता क्यों ?

- जैसा कि हमें पता है कि वैश्वीकरण सभी के लिए समान रूप से लाभप्रद नहीं रहा है।
- शिक्षित, कुशल और संपन लोगों ने वैश्विकरण से मिले अवसरों का लाभ उठाया है और उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।
- जबकि अशिक्षित, अकुशल, गरीब, और भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को वैश्वीकरण से कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं हुआ है, आज भी उनका जीवन का स्तर निम्न है तथा अधिकांश बेरोजगार है।
- अतः सभी को वैश्वीकरण से एक समान रूप से लाभ मिल सके और सभी विकास कर सके इसके लिए वैश्वीकरण को न्यायसंगत बनाना आवश्यक है ।

न्यायसंगत वैश्विकरण बनाने के कुछ पहल (steps)

सरकार वैश्विकरण को और न्यायसंगत बनाने के लिये निम्नलिखित कदम उठा सकती है :-

- सरकार द्वारा श्रमिक कानूनों (Labour Laws) का ऊचित कार्यन्वयन (Implementation) किया जाना चाहिए ताकि श्रमिकों को उनके अधिकार मिल सके l

- सरकार द्वारा छोटे उत्पादकों को वित्तीय सहायता (Financial support) प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे अपनी कार्य निष्पादन (performance) में सुधार कर विदेशी कम्पनियों से प्रतिस्पर्धा करने के लायक बन सकें l

cont.....

न्यायसंगत वैश्विकरण बनाने के कुछ पहल (steps)

सरकार वैश्विकरण को और न्यायसंगत बनाने के लिये निम्नलिखित कदम उठा सकती है :-

- सरकार विश्व व्यापार संगठन से कुछ नीतियों पर समझौता कर सकती है ताकि कुछ वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यापार अवरोधक आरोपित किया जा सके, ताकि घरेलू उत्पादकों को संरक्षण प्राप्त हो सके।
- विश्व व्यापार संगठन में विकसित देशों के वर्चश्व (Dominance) को खत्म करने के लिये विकासशील देशों को मिलकर दबाव बनाना चाहिए।

विशेष आर्थिक क्षेत्र

- **SEZ:-Special Economic Zone**
- **मुख्य उद्देश्य :- विदेशी निवेश को आकर्षित करना**
- **SEZ के माध्यम से सुविधाएं**
  - **विश्व स्तरीय सुविधाएं, बिजली, पानी, सड़क, परिवहन, भंडारण**
  - **उत्पादन इकइयों को Tax holiday**

विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिये सरकार के प्रयास

- SEZ का निर्माण
- श्रम कानूनों में लचीलापन
- व्यापार और आर्थिक नीतियों को उदार बनाना
- LPG :- Liberalisation, privatisation Globalisation